"स्वप्नवासवदत्तम्" में नारी चरित्रों का विश्लेषण

प्रीति

स्नातक शोधकर्ता

संस्कृत विभाग:

मिरांडा हाउस महाविद्यालय:, दिल्ली

सारांश (abstract): -

भूमिका -

संस्कृत नाट्य साहित्य में महाकवि भास का विशेष स्थान माना जाता है । उनकी कृति 'स्वप्नवासवदत्तम्' प्राचीन संस्कृत नाटकों में अत्यन्त प्रसिद्ध है, जिसमें वत्सराज उदयन, वासवदत्ता और पद्मावती से संबंधित घटनाओं का रोचक एवं प्रभावशाली वर्णन प्राप्त होता है । इस नाटक में प्रेम, त्याग, कर्तव्य और मानवीय भावनाओं का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है । विशेष रुप से नारी पात्रों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण उभरकर सामने आता है । वासवदत्ता के चरित्र में त्याग, धैर्य और पातिव्रत्य जैसे गुण दिखाई देते हैं, जबकि पद्मावती के स्वभाव में उदारता, सहृदयता तथा सरलता का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है । अध्ययन से पता लगता है कि इस नाटक में नारी केवल सौन्दर्य की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह संवेदनशील, विवेकशील और प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत होती है ।

उद्देश्य: -

इस शोध का प्राथमिक उद्देश्य नाटक की नायिका वासवदत्ता और सह – नायिका पद्मावती के चरित्र के माध्यम से तत्कालीन समाज में स्त्री की स्थिति को समझना है। शोध का लक्ष्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार नारी पात्रों ने अपनी व्यक्तिगत भावनाओं का दमन कर पारिवारिक और राजनैतिक मर्यादाओं की रक्षा की।

शोध पद्धति: -

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति को आधार बनाया गया है। नाटक के विभिन्न संवादों, घटनाओं और पात्रों के आपसी संबंधों का गहन अध्ययन कर उनके चरित्र की विशेषताओं का विवेचन किया जाएगा।

परिणाम: -

इस शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'स्वप्नवासवदत्तम्' प्राचीन भारतीय समाज के उच्च सामाजिक मूल्यों और आदर्शों को जीवंत रूप में अभिव्यक्त करने वाला एक महत्वपूर्ण नाट्यग्रंथ है। नाटक के माध्यम से तत्कालीन पारिवारिक व्यवस्था, विवाह प्रणालियों और सामाजिक मर्यादाओं की एक स्पष्ट एवं गहरी समझ प्राप्त होती है। विशेष रूप से, नारी पात्रों के चरित्र चित्रण और उनके श्रेष्ठ गुणों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों को अत्यंत सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। उनके त्याग, धैर्य, गरिमा और अटूट कर्तव्यबोध जैसे गुण न केवल उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाते है, बल्कि यह भी दर्शाते है कि सामाजिक और पारिवारिक स्थिरता बनाए रखने में नारी की भूमिका निर्णायक थी।

प्रमुख शब्दावली: -

स्वप्नवासवदत्तम्, महाकवि भास, संस्कृत नाटक, नारी पात्र, नारी चरित्र, वासवदत्ता, पद्मावती।

प्रस्तावना (Preface): -

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है । प्राचीन काल से ही नारी को शक्ति, करुणा और त्याग की प्रतीक के रुप में देखा गया है । प्राचीन भारतीय ग्रन्थों और साहित्य में नारी के विविध रूपों का अत्यंत सुन्दर वर्णन मिलता है । संस्कृत साहित्य में भी नारी को अत्यन्त सम्मानित स्थान प्राप्त है । विशेष रूप से संस्कृत नाटकों में नारी को केवल सौन्दर्य की प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, साहस और त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में भी देखा जाता है । महाकवि भास द्वारा रचित 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में भी नारी पात्रों का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन मिलता है । समाज में नारी की स्थिति सम्मानजनक एवं प्रतिष्ठापूर्ण थी । इस नाटक में वासवदत्ता और पद्मावती जैसे पात्रों के माध्यम से नारी के त्याग, धैर्य, प्रेम और सहनशीलता का अत्यंत सुन्दर चित्रण किया गया है ।

इस प्रकार यह नाटक नारी के सशक्त एवं सम्मानित स्वरुप को उजागर करता है ।

महाकवि भास का परिचय (Introduction to Mahakavi Bhasa): -

महाकवि भास संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाट्यकार थे । इन्हें संस्कृत साहित्य के प्राचीन और महान नाट्यकारों में से एक माना गया है । भास के जीवनकाल के विषय में कोई निश्चित प्रमाण नही है, लेकिन कुछ विद्वानों का मानना है कि भास का समय कालिदास से पूर्व का है । एक किंदन्ती के अनुसार उन्हें जाति के धावक कहा गया है । काव्यप्रकाशकार मम्मटाचार्य ने उन्हे महाराज श्रीहर्ष का समकालीन माना है ।

भासकृत 13 नाटक प्राप्त होते हैं । इनमें 'स्वप्नवासवदत्तम्' विशेष रूप से प्रसिद्ध और लोकप्रिय नाटक है ।

स्वप्नवासवदत्तम्' में नारी पात्रः -

इस नाटक में नारी पात्रों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया गया है । विशेष रूप से वासवदत्ता और पद्मावती के माध्यम से नारी के विभिन्न गुणों को प्रस्तुत किया गया है ।

वासवदत्ता(Vasavadatta): -

अवंतिनरेश प्रद्योत की पुत्री और वत्सराज उदयन की प्रथम पत्नी वासवदत्ता 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की प्रमुख नायिका है । नाट्यशास्त्रीय नियमों के अनुसार वह स्वाकिया नायिका है । नाटककार भास ने उसके चरित्र में अनेक आदर्श गुणों का चित्रण किया है ।

1. आदर्श पतिव्रता नारी –

वासवदत्ता एक पतिव्रता और निःस्वार्थ भाव से अपने पति के प्रति समर्पित नारी थी । वह किसी अन्य पुरुष का मुख भी देखना पसंद नहीं करती थी । वासवदत्ता को 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में राजा उदयन की प्रिय पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है । वह अपने पति के हित के लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने को तैयार हो जाती थी । उसने अपने पति के हित और राज्य की भलाई के लिए अपनी सांसारिक सुख सुविधाओं का त्याग किया । वह यौगन्धरायण (मन्त्री) की योजना को बिना किसी सन्देह के स्वीकार कर लेती है और अनेक कष्टों को धैर्यपूर्वक सहन करती है ।

2. स्वाभिमानी नारी –

नाटककार ने वासवदत्ता को एक स्वाभिमानी स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया है । वह एक स्वाभिमानी नारी है इसी कारण सेवकों द्वारा आश्रम से हटाए जाने पर भी वह दुःखी नहीं होती बल्कि वह दृढ़ता के साथ अपनी बात रखती है-'परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति यथायं परिभवः' । यौगन्धरायण के साथ आश्रम में प्रवेश करते समय भी वह अपने स्वाभिमान का परिचय देती है और परिस्थिति के अनुसार स्पष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त करती है ।

3. गुणसंपन्न –

वासवदत्ता गुणों की धनी है । उसका स्वभाव विनम्र और उदार है । पद्मावती भी वासवदत्ता के गुणों और सौंदर्य की प्रशंसा करती है।

4. आत्मसंयमी –

वासवदत्ता आत्मसंयमी थी, वह अपने भावों पर नियंत्रण रखने में दक्ष थी । जैसे ही पद्मावती और उदयन के विवाह की चर्चा होती हैं, वासवदत्ता को अपना दुःख छिपाना पड़ता है और वह सामान्य रहने का अभिनय करती है । यह नारी के त्यागमय आदर्श और आत्म नियंत्रण को दर्शाता है । इस प्रकार जो (वासवदत्ता) राजकुमारी सभी सुख-सुविधाओं से रहती है वह अपने पति के हित के लिए अपने राजसी सुख त्याग कर साधारण जीवन व्याप्त कर रही थी । वासवदत्ता के चरित्र में पतिव्रत धर्म, कुलीनता, उदारता, संयम तथा प्रेम जैसे श्रेष्ठ गुणों का समन्वय दिखाई देता है ।

पद्मावती (Padmavati): -

नाटककार भास ने राजकुमारी पद्मावती का चित्रण एक आदर्श नायिका के रूप में किया है । वह अत्यंत सुन्दर, मधुर स्वभाव वाली और विनम्र राजकुमारी है । उसके चरित्र में अनेक गुणों का समावेश मिलता है ।

1. धार्मिक एवं दानशीला –

पद्मावती एक धार्मिक प्रवृत्ति की नारी थी । वह धार्मिक कार्यों में रुचि रखती थी और दान देना अपनी कुल परंपरा मानती थी । आश्रम में पहुंचकर पद्मावती ने घोषणा कि जिसको जो चाहिए वह उन्हें निःस्वार्थ भाव से देगी और दान के लिए लोगों को आमंत्रित करती है । वह जब भी किसी धार्मिक स्थान पर जाती थी तो बिना दान किए नहीं लौटती थी ।

2. दृढ़ प्रतिज्ञ –

पद्मावती अपने निर्णयों में दृढ़ रहने वाली नारी थी । यौगंधरायण ने वासवदत्ता को पद्मावती के पास रखने की अनुमति मांगी, तो पद्मावती अपनी बात से पीछे नहीं हटी, बल्कि वह अपने कर्तव्य का पालन करती है ।

3. अद्वितीय सौन्दर्य -

पदमावती अत्यंत सुन्दर राजकुमारी थी । उसके सौन्दर्य और व्यक्तित्व से सभी प्रभावित होते थे । स्वयं वासवदत्ता उसके रूप और स्वभाव की प्रशंसा भी करती है ।

4. ईर्ष्या द्वेष रहित –

पद्मावती के हृदय में किसी प्रकार की ईर्ष्या या द्वेष की भावना नही थी । वासवदत्ता और उदयन के प्रेम की बात जानकर भी वह उन दोनों से ईर्ष्या नही करती, बल्कि वह वासवदत्ता को अपनी बहन के समान समझती थी ।

5. उदारहृदया –

पद्मावती उदार हृदय वाली एक नारी थी । जब वह तपोवन में जाती है तो मर्यादा का पालन करते हुए दान देने की घोषणा करती है । उसका हृदय विशाल और उदार था । पद्मावती का वासवदत्ता के प्रति स्नेह और सम्मान का भाव था । वह वासवदत्ता को 'आर्ये' कहकर संबोधित करती थी, जो उसके उदार और महान स्वभाव को दर्शाता है ।

इस प्रकार नाट्यकार भास ने अत्यन्त सूक्ष्मता से पद्मावती का चरित्र - चित्रण किया है । उसके व्यक्तित्व में सौंदर्य, विनम्रता, उदारता, कर्तव्यनिष्ठा और शालीनता जैसे अनेक गुणों का समन्वय दिखाई देता है ।

अन्य स्त्री पात्र: -

नाटक में अन्य स्त्री पात्र भी हैं । इनमें पद्मावती की माता, दासियां तथा आश्रम में रहने वाली स्त्रियाँ प्रमुख है जो नाटक की कथा को आगे बढ़ाने में सहायक है । पद्मावती की माता को एक कर्तव्यनिष्ठ और स्नेहमयी माता के रूप में दिखाया गया है जो सदैव अपनी पुत्री के भविष्य के प्रति चिंतित रहती है । इसी प्रकार नाटक में दासियों का भी उल्लेख मिलता है, जो निःस्वार्थ भाव से राजकुमारियों की सेवा करती है और उनकी आज्ञा का पालन करती है । नाटक के अंतिम अंक में उज्जयिनी से आई धात्री ही वह पात्र है जो वासवदत्ता की 'धरोहर' के रूप में रक्षा करती है और अंत में उसकी पहचान उजागर कर पुनर्मिलन का मार्ग प्रशस्त करती है ।

सामाजिक दृष्टि से नारी का स्थान(The Social Status of Women): -

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के अध्ययन से पता चलता है कि स्त्रियों को समाज में सम्मानित और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था । वे आदर का पात्र थीं । नारी की भूमिका केवल परिवार तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि समाज और राज्य के हित में वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी ।

नाटक में स्त्रियों को अनेक कलाओं में निपुण प्रदर्शित किया गया है जैसे संगीत, चित्रकला, माला गुम्फन, वीणा वादन, साहित्य आदि । नाटक में वासवदत्ता वीणा बजाती थी । स्त्रियां केवल सुख विलास में ही नहीं रहती थी, बल्कि व्यायाम भी करती थी । पद्मावती के गेंद से खेलने के प्रमाण मिलते है । समाज में स्त्रियों को एक-दूसरे के प्रति प्रेम की भावना थी । धार्मिक कार्यों में भी स्त्रियों का विशेष महत्व था । पद्मावती दान आदि परंपराओं में विश्वास रखती थी ।

वासवदत्ता और पद्मावती जैसे पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि नारी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

निष्कर्ष(Conclusion): -

अतः स्पष्ट होता है कि 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में नारी पात्रों का अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली स्थान था । नाटककार भास ने वासवदत्ता और पद्मावती जैसे पात्रों के माध्यम से नारी के त्याग, धैर्य, सहनशीलता, प्रेम तथा उदारता सदृश गुणों को उजागर किया है । वासवदत्ता आदर्श पतिव्रता नारी, स्वाभिमानी, आत्म नियंत्रण तथा गुण संपन्न रूप में चित्रित की गई है, जबकि पद्मावती धार्मिक, दृढ़ प्रतिज्ञ, उदार हृदय तथा ईर्ष्या-द्वेष रहित होने के कारण विशेष रूप से प्रशंसनीय प्रतीत होती है । इसके अतिरिक्त अन्य स्त्री पात्रों ने भी कथा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इस प्रकार स्पष्ट होता है कि नारी को केवल सौन्दर्य के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि उच्च आदर्शों और सशक्त व्यक्तित्व के रूप में भी देखा जाता है ।

अतः कहा जा सकता है कि 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक भारतीय साहित्य में नारी के आदर्श स्वरुप को प्रदर्शित करता है ।

आधुनिक संदर्भ में देखा जाए तो आज भी नारी अनेक क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । शिक्षा, समाज, राजनीति तथा विभिन्न क्षेत्रों में नारी ने अपनी क्षमता और प्रतिभा का परिचय दिया है । वह समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । इस दृष्टि से 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में चित्रित नारी के गुण आधुनिक समय में भी प्रासंगिक प्रतीत होते है । अतः कहा जा सकता है कि यह नाटक केवल प्राचीन समय का चित्रण नहीं करता, बल्कि वर्तमान समय में भी नारी के आदर्श स्वरूप और उसके महत्व को समझने में सहायक सिद्ध होता है ।

शोध उद्देश्य की पूर्ति: -

इस शोध के अंतर्गत निर्धारित उद्देश्यों की सफलतापूर्वक पूर्ति होती हुई दृष्टिगत होती है । नाटक स्वप्नवासवदत्तम् के गहन अध्ययन एवं विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि महाकवि भास ने नारी पात्रों के माध्यम से तत्कालीन समाज में स्त्री की वास्तविक एवं सम्मानजनक स्थिति को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया है । वासवदत्ता और पद्मावती के चरित्रों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि नारी केवल भावनात्मक या सौंदर्य की प्रतीक नहीं थी,

बल्कि वह कर्तव्यनिष्ठ, त्यागमयी, विवेकशील एवं सामाजिक मर्यादाओं की संरक्षिका भी थी ।

शोध का मुख्य उद्देश्य नारी के सामाजिक स्थान, उसके गुणों तथा उसकी भूमिका को स्पष्ट करना था, जो कि पूर्णतः सफल सिद्ध हुआ है । नाटक में वर्णित घटनाओं, संवादों एवं पात्रों के व्यवहार से यह प्रमाणित होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक थी । इस प्रकार यह शोध अपने उद्देश्यों को सिद्ध करते हुए न केवल नारी की गरिमा को स्थापित करता है, बल्कि भास के साहित्य की सामाजिक प्रासंगिकता को भी उजागर करता है ।

भविष्यपरक शोध संभावनाएं: -

- स्वप्नवासवदत्तम् के अतिरिक्त महाकवि भास के अन्य नाटकों को आधार बनाकर नारी की स्थिति, भूमिका एवं अधिकारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।
- भासकालीन समाज में स्त्रियों की सामाजिक, पारिवारिक एवं राजनीतिक स्थिति पर विस्तृत शोध कार्य किया जा सकता है ।
- स्वप्नवासवदत्तम् में नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण भविष्य में एक स्वतंत्र शोध का विषय हो सकता है ।
- वासवदत्ता और पद्मावती जैसे पात्रों का स्त्रीवादी(Feminist) दृष्टिकोण से अध्ययन कर नारी स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्णय की स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है ।
- नाटक में वर्णित नारी की स्थिति की तुलना आधुनिक समाज की नारी से करते हुए एक समकालीन अध्ययन किया जा सकता है ।
- स्वप्नवासवदत्तम् के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक पक्षों पर बहुआयामी अध्ययन की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं ।

संदर्भ सूची: -

1. भास: स्वप्नवासवदत्तम्
2. मनुस्मृति (अध्याय 3 एवं 5)
3. डॉ. बलदेव उपाध्याय: संस्कृत साहित्य का इतिहास
4. ए.एस. अल्तेकर: प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति
5. पी.वी. काणे: धर्मशास्त्र का इतिहास,